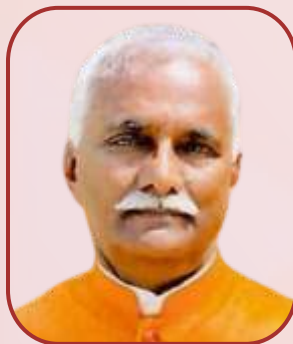


Padma Shri



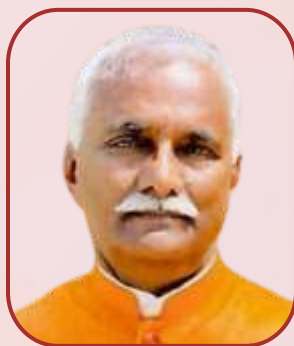
SHRI CHANDRASHEKHAR SINGH

Shri Chandrashekhar Singh is an innovative farmer, who has been working tirelessly to bring scientific temper and modernization in agriculture while collaborating with thousands of farmers to help them in increasing their productivity and income. As an astute agriculture researcher, he has not only developed many high yielding and high valued crop varieties but also strived towards enabling farmers to get access to those varieties and upskilling themselves in quality seed production. In the direction of addressing one of biggest challenges of agriculture which is backward and forward linkages of agriculture sector, he has conceptualized and introduced a digital platform “Krishine” which envisages to help farmers in accessing quality inputs at affordable prices and integrating their produce with market. He has also founded a research-based seed manufacturing unit - “Vasundhara”, a well-known seed brand preferred by many farmers across India.

2. Born on 2nd July, 1956, Shri Singh received his Bachelor degree in 1982 and completed his LLB in 1985 from Gorakhpur University. His life and work ethics are greatly influenced by his father who was a farmer and a school teacher. He has sincerely mirrored his father's ideology of "Don't stop working when tired, work until the work comes to an end". He, as an agricultural scientist, from the very young age itself, started experimenting with modern farming techniques to improve yield and quality of seeds. Since 1986, he has been paying more attention to "Organic Farming". He has been working with the agricultural scientists of KVK Varanasi and Banaras Hindu University for more than 30 years. In 2015, after continuous efforts, he succeeded in inventing the high yield seeds and applied for their registration in Protection of Plant Varieties and Farmers' Rights Authority (PPVFRA). In 2019 his first four varieties got registered with PPVFRA, namely Vasundhara Damini, Mayuri-6698, Sai Neelkanth of Paddy and Baba Vishwanath of wheat. He also developed a dwarf variety of Pigeon Pea and a new technique of paddy transplantation. To spread the awareness and adoption of modern ways of agriculture, he approached the Vice-Chancellor of BHU with the concept of Kisan Mela and in 2007 he hosted the first Kisan Mela of BHU at his own farm.

3. Being son of a school teacher, Shri Singh has been extremely passionate about improving quality and accessibility of education in his surroundings. Through his sustained efforts he was able to bring together the District Education Department, the Gram Sabha and a private company which completely turned around the condition of Government school in his village. From an inutile situation, the school has transformed into a model school with advanced physical infrastructure and equipped with smart classes, science labs and quality mid-day meal. During current COVID pandemic, in his personal capacity, he distributed essentials such as rice flour, pulses, spices and more for 1000 families of Varanasi and 800 families of Lucknow.

4. Shri Singh is a recipient of numerous awards of national repute in field of agriculture including "The President's Award" at the National Conference on KVK - 2010, Udaipur. In 2015, he was honoured at the foundation day event of ICAR-DSR. His other awards include Jagjeevan Ram Innovative Farmer Award (ICAR)- 2011, Innovative Rice Farms Award- DRR- Hyderabad- 2011, Honoured as The Navonmeshi Cultivator-ICAR-2011, Innovative Farms Award-ISEE- Jabalpur-2011, Appreciation Award - KVK Zone- IV (ICAR) Foundation Day 2012, Honoured on the Foundation Day of the Directorate of Seed Research ICAR in 2015, Seed Production Award- BHU 2011, Farm Innovator Award- Mysore 2010, Appreciation Award at Farmers Fair (IARI) Pusa, New Delhi, Government of India 2010, Award for using The Latest Farming Techniques-BHU 2010, Scientific Farmer Cooperation Award- BHU 2008, Progressive Farmer Award- IARI 2008, Chief Speaker Award- IARI 2008, "Chandra Shekhar Krishi Vid" Award- CSAU Kanpur 2007 and Second Green Revolution Sammelan Award- CSAU Kanpur 2007.



श्री चन्द्रशेखर सिंह

श्री चन्द्र शेखर सिंह एक नवान्वेषी किसान हैं, जो हजारों किसानों के साथ मिलकर उनकी उत्पादकता और आय को बढ़ाने में सहायता करने के लिए कृषि क्षेत्र में वैज्ञानिक चेतना और आधुनिकीकरण लाने का अथक प्रयास कर रहे हैं। एक दक्ष कृषि अनुसंधानकर्ता के रूप में, उन्होंने न केवल अधिक उपज और उच्च मूल्य वाली किस्में तैयार कीं बल्कि किसानों को उन किस्मों को प्राप्त करने में मदद करने, और उन्हें गुणवत्तापूर्ण बीज के उत्पादन में कुशल बनाने की दिशा में भी प्रयास किया। कृषि के क्षेत्र में सबसे बड़ी चुनौती बैकवर्ड और फॉरवर्ड लिंकेज को स्थापित करना है और श्री सिंह ने उसके लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म “कृषशाइन” की संकल्पना और उसकी शुरुआत की। इससे किसानों को बेहतर कृषि साधन किफायती दाम पर प्राप्त करने और अपने उत्पादों को बाजार के साथ जोड़ने में सहायता मिली है। उन्होंने अनुसंधान आधारित बीज उत्पादन इकाई— “वसुंधरा” की नींव भी रखी जो आज देश भर के किसानों का पसंदीदा जाना—माना बीज ब्रांड बन चुका है।

2. 2 जुलाई, 1956 को जन्मे, श्री सिंह ने गोरखपुर विश्वविद्यालय से 1982 में स्नातक और 1985 में एलएलबी की डिग्री प्राप्त की। उनके जीवन और कार्य नैतिकता पर उनके किसान और अध्यापक पिता का गहरा प्रभाव पड़ा। वह अपने पिता के इस कथन, “थक जाने के बाद भी मत रुको, जब तक काम पूरा न हो जाए लगे रहो” का अनुकरण करते हैं। उन्होंने एक कृषि वैज्ञानिक के रूप में बहुत छोटी उम्र से ही उपज और बीज की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए आधुनिक कृषि तकनीकों के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया था। वह 1986 से “जैविक खेती” पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। वह कृषि विज्ञान केंद्र, बनारस और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों के साथ 30 वर्षों से अधिक समय से काम करते आ रहे हैं। वर्ष 2015 में अपने सतत प्रयासों के बाद, वह अधिक उपज वाले बीज का आविष्कार करने में सफल हुए और उन्होंने प्रोटेक्शन ऑफ प्लांट वैरायटी एंड फार्मर्स राइट्स अथॉरिटी (पीपीवीएफआरए) में अपना पंजीकरण कराने के लिए आवेदन किया। वर्ष 2019 में धान के लिए वसुंधरा दामिनी, मयूरी-6698, साई नीलकंठ और गेहूं के लिए बाबा विश्वनाथ नामक उनकी पहली 4 किस्मों का पंजीकरण पीपीवीएफआरए से हुआ। उन्होंने हरे मटर की छोटी किस्म और धान रोपने की नई तकनीक भी विकसित की। उन्होंने कृषि के आधुनिक तरीकों को अपनाने और इस बारे में जागरूकता फैलाने के लिए, किसान मेले की संकल्पना के साथ बीएचयू के कुलपति से संपर्क किया और वर्ष 2007 में बीएचयू के पहले किसान मेले का आयोजन अपने खेतों में किया।

3. एक स्कूल शिक्षक के पुत्र होने के नाते, श्री सिंह अपने आस-पास शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने और उसे सुलभ बनाने के प्रति अत्यंत उत्साही हैं। अपने निरंतर प्रयासों से, उन्होंने जिला शिक्षा विभाग, ग्राम सभा और एक निजी कम्पनी की मदद से अपने गांव के सरकारी विद्यालय की तस्वीर बदल दी है। अत्यंत दयनीय स्थिति वाला स्कूल अत्याधुनिक भौतिक सुविधाओं, स्मार्ट क्लास, विज्ञान प्रयोगशाला और गुणवत्तापूर्ण मध्याह्न भोजन से सुसज्जित एक मॉडल स्कूल में तब्दील हो गया है। वर्तमान कोविड महामारी के दौरान, उन्होंने अपनी निजी क्षमता के द्वारा बनारस के 1000 से अधिक परिवार और लखनऊ के 800 से अधिक परिवार को चावल, आटा, दाल, मसाले और अन्य सामग्री का वितरण किया।

4. श्री सिंह को कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर के कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्हें 2010 में केवीके पर राष्ट्रीय सम्मेलन, उदयपुर में “राष्ट्रपति पुरस्कार” और वर्ष 2015 में, आईसीएआर—डीएसआर के स्थापना दिवस समारोह में सम्मानित किया गया था। उन्हें प्राप्त अन्य पुरस्कारों में, जगजीवन राम नवान्वेषी किसान पुरस्कार (आईसीएआर)—2011, इनोवेटिव राइस फॉर्मिस अवार्ड—डीआरआर—हैदराबाद—2011, नवान्वेषी कल्टीवेटर पुरस्कार—आईसीएआर—2011, इनोवेटिव फॉर्मिस अवार्ड—आईएसईई—जबलपुर—2011, एग्रीशिऐशन अवार्ड—केवीके जोन—IV (आईसीएआर) स्थापना दिवस, 2012, वर्ष 2015 में बीज अनुसंधान निदेशालय, आईसीएआर के स्थापना दिवस पर सम्मान, बीज उत्पादन पुरस्कार—बीएचयू, 2011, फॉर्म इनोवेटिव अवार्ड—मैसूर, 2010, किसान मेला (आईएआरआई), पूसा नई दिल्ली, भारत सरकार द्वारा प्रशंसा पुरस्कार, 2010, अत्याधुनिक कृषि तकनीक के उपयोग के लिए पुरस्कार—बीएचयू, 2010, वैज्ञानिक किसान सहयोग पुरस्कार—बीएचयू, 2008, प्रगतिशील किसान पुरस्कार—आईएआरआई, 2008, मुख्य वक्ता पुरस्कार—आईएआरआई, 2008, “चंद्र शेखर कृषि विद” पुरस्कार—सीएसएयू कानपुर, 2007 और द्वितीय हरित क्रांति सम्मेलन पुरस्कार—सीएसएयू कानपुर, 2007 शामिल हैं।